श्री अन्नपूर्णा स्तोत्रं

श्री अन्नपूर्णा स्तोत्रं

नित्यानंदकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलदोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी |
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 1 ||

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमांबराडंबरी
मुक्ताहारविडंबमानविलसद्वक्षोजकुंभांतरी |
काश्मीरागरुवासितांगरुचिरा काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 2 ||

योगानंदकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चंद्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी |
सर्वैश्वर्यकरी तपः फलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 3 ||

कैलासाचलकंदरालयकरी गौरी ह्युमाशांकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी |
मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 4 ||

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्मांडभांडोदरी
लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपांकुरी |
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 5 ||

आदिक्षांतसमस्तवर्णनकरी शंभुप्रिया शांकरी
काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी |
स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी || 6 ||

उर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी
नारीनीलसमानकुंतलधरी नित्यान्नदानेश्वरी |
साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी || 7 ||

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुंदरी
वामा स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी |
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी || 8 ||

चंद्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चंद्रांशुबिंबाधरी
चंद्रार्काग्निसमानकुंडलधरी चंद्रार्कवर्णेश्वरी |
मालापुस्तकपाशसांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी || 9 ||

क्षत्रत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी
सर्वानंदकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी |
दक्षाक्रंदकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी || 10 ||

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे |
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति || 11 ||

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः |
बांधवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयं || 12 ||

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ अन्नपूर्णा स्तोत्रं |